प्राण प्रतिष्ठा प्रयोग

दिशाः उत्तर

वस्त्रः पीले या श्वेत वस्त्र उचित हैं ।

गुरु पूजन, गणपति पूजन, इष्ट पूजन के बाद उनकी आज्ञा लेकर ही प्राण प्रतिष्ठा प्रयोग करना चाहिए । घी का दीपक अपने दाहिनी और प्रज्वलित करना चाहिए ।

विनियोग

हाथ में जल लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें और जमीन पर छोड़ दें ।

।। ॐ अस्य अमुक प्राण प्रतिष्ठा मंत्रस्य वशिष्ठ ऋषि ऊर्ध्वछंद प्राण प्रतिष्ठा स्थापने विनियोगः ।।

चेतना मंत्रः

कम से कम 1 माला तो चेतना मंत्र का जप करना ही चाहिए ।

।। ॐ ह्रीं मम् प्राण देह रोम प्रतिरोम चैतन्य जाग्रय ह्रीं ऊँ नमः ।।

।। Om hreem mam pran deh rom pratirom chaitanya jaagray hreem om namah ।।

मूल मंत्रः

।। ॐ क्रीं अं हं क्रीं आं हं क्रीं इं हं क्रीं ईं हं क्रीं उं हं क्रीं ऊं हं क्रीं एं हं क्रीं ऐं हं क्रीं ओं हं क्रीं औं हं क्रीं अं हं क्रीं अः हं क्रीं कं हं क्रीं खं हं क्रीं गं हं क्रीं घं हं क्रीं ङं हं क्रीं चं हं क्रीं छं हं क्रीं जं हं क्रीं झं हं क्रीं ञं हं क्रीं टं हं क्रीं ठं हं क्रीं डं हं क्रीं ढं हं क्रीं णं हं क्रीं तं हं क्रीं थं हं क्रीं दं हं क्रीं धं हं क्रीं नं हं क्रीं पं हं क्रीं फं हं क्रीं बं हं क्रीं भं हं क्रीं मं हं क्रीं यं हं क्रीं रं हं क्रीं लं हं क्रीं वं हं क्रीं शं हं क्रीं षं हं क्रीं सं हं क्रीं हं हं ।।

सामान्य प्राण प्रतिष्ठा में मूल मंत्र का केवल 1 बार उच्चारण करना है । विशेष में 3 बार और अति विशिष्ट में 101 बार प्रयोग करना है। स्वयं की प्राण प्रतिष्ठा शिखा पर हाथ रखकरके, या वक्ष स्थल पर दाहिने हाथ की उंगलियों का स्पर्श करते हुये, यंत्र की प्राण प्रतिष्ठा के लिए यंत्र के मध्य भाग में स्पर्श करते हुए इसका उच्चारण करना है । और चित्र के भी मध्य भाग में स्पर्श करना है । मूल तथ्य यह है कि आपके शरीर का स्पर्श हो और फिर मंत्र प्रयोग हो ।